विश्वविद्यालय के विषय में

जम्मू केंद्रीय विश्वविद्यालय 2011 में केंद्रीय विश्वविद्यालय अधिनियम, 2009 के तहत स्थापित जम्मू और कश्मीर के सांबा जिले में स्थित एक प्रमुख उच्च शिक्षा संस्थान है। विश्वविद्यालय का विशाल और सुंदर परिसर सांबा जिले के राया–सुचानी गाँव में 610 एकड़ में फैला हुआ है, जिसमें कई उल्लेखनीय भौगोलिक विशेषताएँ शामिल हैं, जिसमें सुंदर वातावरण, विभिन्न इमारतें और खुली सड़कें शामिल हैं, जिसमें प्राकृतिक सुंदरता के साथ अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी के साथ उत्कृष्ट भवन शामिल हैं, जो अध्ययन और अनुसंधान के लिए अनुकूल परिवेश प्रदान करता है।

जम्मू केंद्रीय विश्वविद्यालय शैक्षणिक उत्कृष्टता, नवाचार, और सामाजिक उत्तरदायित्व के प्रति समर्पित है। यह विश्वविद्यालय इंजीनियरिंग, व्यवसाय अध्ययन, जीव विज्ञान, आधारिक और अनुप्रयुक्त विज्ञान, राष्ट्रीय सुरक्षा अध्ययन, मानविकी और सामाजिक विज्ञान, जनसंचार और नवीन मीडिया अध्ययन, शैक्षिक अध्ययन और भाषा जैसे विभिन्न विषयों में स्नातक, स्नातकोत्तर और पी.एच.डी की उपधियां प्रदान करता है।

आधुनिक बुनियादी ढाँचे, अत्याधुनिक प्रयोगशालाओं, समृद्ध पुस्तकालय और जीवंत छात्र सुविधाओं से सुसज्जित, जम्मू केंद्रीय विश्वविद्यालय अंतर्विषयक अनुसंधान, समावेशिता और सामुदायिक सहभागिता को प्राथमिकता देता है। विश्वविद्यालय नियमित रूप से कार्यशालाओं, सेमिनारों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करता है, जिससे प्रतिदिन छात्रों को नई गतिविधियों को सीखने का अवसर मिलता है।

क्षेत्रीय और वैश्विक चुनौतियों का समाधान करने के विचार के साथ, जम्मू केंद्रीय विश्वविद्यालय ने गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और छात्रों के समग्र विकास के केंद्र के रूप में अपनी पहचान बनाई है, जो नई प्रतिभाओं को समाज और राष्ट्र निर्माण में सार्थक योगदान देने के लिए प्रेरित करने का कार्य करता है।

विभाग के विषय में

जम्मू एवं कश्मीर राज्य के जम्मू अंचल की भाषाई संरचना एवं स्थानीय मांग को देखते हुए जम्मू केन्द्रीय विश्वविद्यालय में हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग की अगस्त 2015 में स्थापना हुई। इस विभाग को राष्ट्रभाषा हिन्दी और साहित्य के अध्ययन और शोध के साथ ही डोगरी और अन्य स्थानीय भाषाओं के अध्ययन का मुख्य केंद्र बनाए जाने का लक्ष्य रखा गया। वर्तमान में विभाग माननीय कुलपति प्रो. संजीव जैन जी के दिशा निर्देशन में विकसोन्मुख है और नए आयामों को प्राप्त करने हेतु प्रतिबद्ध है। विभाग हिन्दी भाषा, साहित्य और अंतर–अनुशासनिक भारतीय भाषाओं एवं साहित्य के शिक्षण द्वारा भारतीय सभ्यता, संस्कृति, दर्शन तथा सामाजिक–राजनैतिक चुनौतियों से परिचित कराने के लिए प्रतिबद्ध है। विभाग अद्यतन प्रविधियों का उपयोग करते हुए नवीन विषयों– रचनात्मक लेखन, पटकथा लेखन, पत्रकारिता, अनुवाद एवं प्रयोजनमूलक हिन्दी आदि रोजगारोन्मुखी शिक्षण के प्रति संकल्पबद्ध है। विभाग प्राचीन, मध्यकालीन, रीतिकालीन, आधुनिक साहित्य, विमर्श, भाषाविज्ञान, काव्यशास्त्र और तुलनात्मक अध्ययन आदि पर शोधकार्य के लिए प्रतिबद्ध है।

संगोष्ठी के विषय में

जम्मू–कश्मीर की भाषा एवं साहित्य की दृष्टि से "भारतीय ज्ञान परंपरा एवं संस्कृति के अलोक में जम्मू–कश्मीर का हिंदी साहित्य" विषय पर आयोजित इस संगोष्ठी का महत्व बहुत ही प्रासंगिक और महत्वपूर्ण है। सच तो यह है कि किसी भी राष्ट्र की एकता और अखंडता में उसकी भाषा एवं साहित्य की बहुत बड़ी भूमिका होती है। भाषा के रूप में हिंदी हमेशा से हमारे जीवन–मूल्यों एवं संस्कृति की सच्ची संवाहक रही है। अतः इस संगोष्ठी के माध्यम से यह प्रयास होगा कि जम्मू–कश्मीर जैसे अहिन्दी भाषी केन्द्रशासित प्रदेश में बड़े स्तर पर हिंदी भाषा के प्रयोग और प्रचलन के लिए उचित माहौल बनाया जाए, जिससे बड़ी संख्या में यहाँ के लोग हिंदी भाषा एवं साहित्य के प्रति आकर्षित हों। आधिकारिक भाषा का दर्जा मिलने के बाद इस राज्य में हिंदी भाषा में रोजगार की संभावना बढ़ गयी है। हिंदी आम आदमी की भाषा के रूप में देश की एकता को एक सूत्र में बाँधने का काम करती रही है। भूमंडलीकरण के इस दौर में हिंदी एक मजबूत भाषा के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही है। जम्मू–कश्मीर को केंद्र में रख कर लिखे गये हिंदी साहित्य पर विचार करना इस संगोष्ठी के महत्व को और प्रासंगिक बनाता है। जिस तरह हिंदी का दायरा व्यापक और विस्तृत हो रहा है, वह इस बात का परिचायक है कि आने वाला समय हिंदी भाषा को रोजगार की असीम संभावनाओं से समृद्ध करेगा तथा जम्मू एवं कश्मीर में उर्दू और अंग्रेजी के साथ हिंदी, डोगरी और कश्मीरी को आधिकारिक भाषा के रूप में मान्यता देना इस संगोष्ठी के महत्व को और बढ़ाता है। हिंदी अब इस राज्य की आधिकारिक भाषा बन चुकी है, अतः भाषा एवं साहित्य की दृष्टि से इस केन्द्रशासित प्रदेश में हिंदी के भविष्य एवं रोजगार की संभावनाओं पर विचार करना इस संगोष्ठी के महत्व को दर्शाता है।

सह-संरक्षक
प्रो. यशवंत सिंह
कुलसचिव, जम्मू केंद्रीय विश्वविद्यालय

संगोष्ठी अध्यक्ष
प्रो. वन्दना शर्मा
अधिष्ठाता, भाषा संकाय

संगोष्ठी निदेशक
प्रो. भारत भूषण
अध्यक्ष, हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग

संगोष्ठी संयोजक

डॉ. शशिकांत मिश्र
सह-आचार्य
हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग

डॉ. वन्दना शर्मा
सहायक आचार्य
हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग

आयोजन समिति

डॉ. विनय कुमार शुक्ल
सहायक आचार्य
हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग

डॉ. रत्नेश कुमार यादव
सहायक आचार्य
हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग

डॉ. अरविन्द कुमार यादव
सहायक आचार्य
हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग

हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग
जम्मू केंद्रीय विश्वविद्यालय
एवं
भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (ICSSR)
के द्वारा वित्त पोषित
दो दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी
(24–25 फरवरी 2025)

संगोष्ठी का विषय एवं उपविषय
"भारतीय ज्ञान परम्परा एवं संस्कृति के आलोक में जम्मू–कश्मीर का हिंदी साहित्य"

उप विषय

1. भारतीय ज्ञान परम्परा एवं संस्कृति : एक विहंगावलोकन
2. भारतीय ज्ञान परम्परा की दृष्टि में जम्मू–कश्मीर का हिंदी साहित्य
3. जम्मू–कश्मीर में हिंदी भाषा एवं साहित्य : दशा और दिशा
4. हिंदी साहित्य को जम्मू–कश्मीर की देन
5. समसामयिक प्रश्न और जम्मू–कश्मीर का साहित्य
6. जम्मू–कश्मीर का साहित्य और हिंदी का वैश्विक परिदृश्य
7. काव्य प्रतिमान और जम्मू–कश्मीर का साहित्य
8. जम्मू केंद्रित साहित्य पर निर्मित सिनेमा
9. जम्मू–कश्मीर के हिंदी साहित्य में भारतीय ज्ञान परम्परा
10. जम्मू–कश्मीर : भाषा, साहित्य और संस्कृति
11. जम्मू–कश्मीर की स्वतंत्रता पूर्व हिंदी पत्रकारिता के सरोकार
12. जम्मू–कश्मीर की स्वातंत्र्योत्तर हिंदी पत्रकारिता के सरोकार
13. जम्मू–कश्मीर में हिंदी के प्रचार–प्रसार में पत्रिकाओं एवं साहित्यिक संस्थाओं की भूमिका
14. जम्मू–कश्मीर में हिंदी साहित्यः चुनौतियाँ एवं सम्भावनाएं

शोधालेख जमा करने हेतु निर्देश–

1. शोध पत्र की शब्द सीमा लगभग 2500–3000 शब्द है
2. शोध पत्र यूनिकोड फॉण्ट में हो
3. शोध पत्र की Word एवं PDF फाईल दोनों जमा करें
4. शोधपत्रः शोध सार, बीज शब्द, मूल आलेख सहित अंत में संदर्भ सूची (लेखक का नाम, पुस्तक का नाम, पृ.सं.) होनी चाहिए

शोधालेख निम्न मेल पर जमा करें:
seminar.hnd.cujammu@gmail.com

निःशुल्क पंजीकरण लिंकः
https://docs.google.com/forms/d/e/1FAIpQLSeDhw0tcaKyulusgHiKFHCig_CFhT4AKvKDTnSYajCrRBE83A/viewform?usp=header

व्हाट्सएप समूह से जुड़ने हेतु लिंक
https://chat.whatsapp.com/FAIiKgQhIDc89pI4PPD5MO

संपर्क विवरण:

प्रो. भारत भूषण
9814811200
ई–मेल : bharat.hnd@cujammu.ac.in

डॉ. शशिकांत मिश्र
9030963026
ई–मेल : shashi.hnd@cujammu.ac.in

डॉ. वन्दना शर्मा
9419292999
ई–मेल : vandana.hnd@cujammu.ac.in

हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग
जम्मू केंद्रीय विश्वविद्यालय
एवं
भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (ICSSR)
के द्वारा वित्त पोषित
दो दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी
(24–25 फरवरी 2025)
"भारतीय ज्ञान परम्परा एवं संस्कृति के आलोक में जम्मू–कश्मीर का हिंदी साहित्य"

संरक्षक
प्रो. संजीव जैन
माननीय कुलपति
जम्मू केंद्रीय विश्वविद्यालय

मुख्य अतिथि
प्रो. उपासना जोशी
निदेशक
भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद
एन.डबल्यू.आर.सी. चंडीगढ़

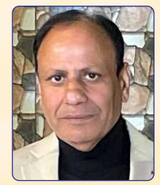

विशिष्ट अतिथि
श्री प्रमोद कुमार
अध्यक्ष, पंजाबी सभा, मास्को, रूस

समय – प्रातः 10:30 बजे

स्थान–
ब्रिगेडियर राजेन्द्र सिंह सभागार
जम्मू केंद्रीय विश्वविद्यालय, साम्बा